S-I

CORE-I

...E OF MOTIVATION IN LEARNING

Q. Discuss the role of motivation in learning.

सीखने में प्रेरणा की महत्व का वर्णन करें

Ans शिक्षण एक व्यापक शब्द है जिसका अध्ययन मनोविज्ञान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है चाहे पशु शिक्षण हो या मानव शिक्षण दोनों में अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। क्योंकि यही मानव या पशु को अनुक्रिया करने के लिए आंतरिक शक्ति (internal force) प्रदान करता है। प्राणी शिक्षण की कुशलता पर कई तरह के कारकों का प्रभाव पड़ता है जिसे S-factor, O-factor तथा R-factor कहते हैं। ये सभी कारक अपने-2 आधार पर महत्वपूर्ण है लेकिन इनमें O-factor सबसे महत्वपूर्ण है। प्रयोज्य से संबंधित कारकों को ही O-factor (प्राणी कारक) कहा जाता है जिसमें प्रयोज्य की बुद्धि, प्रेरणा, थकान, आयु, अभ्यास आदि प्रमुख है।

प्रेरणा का प्रभाव एक ओर पशु शिक्षण पर तो दूसरी मानव शिक्षण पर भी पड़ता है। यहाँ पशु तथा मानव के शिक्षण पर प्रेरणा के महत्व को अलग-अलग स्पष्ट करने की चेष्टा की जा रही है।

HUMAN LEARNING - मानव शिक्षण

मानव शिक्षण पर प्रेरणा का प्रभाव पड़ता है लेकिन मानव शिक्षण पर जैविक प्रेरक की अपेक्षा अर्जित अभिप्रेरक का प्रभाव अधिक पड़ता है। क्योंकि मनुष्य इसी प्रेरक के कारण ही अपने जीवन काल में भिन्न-2 चीजों को काफी तेजी से सीखता है। यहाँ कुछ ऐसे मनोवैज्ञानिक अध्ययनों को प्रस्तुत किया जा रहा है जो मानव शिक्षण में प्रेरणा के महत्व को स्पष्ट करता है।

मानव शिक्षण पर सबसे पहले थार्नडाइक (Thorndike) ने प्रेरणा के महत्व पर बल दिया इन्होंने अपने प्रभाव नियम के अंतर्गत यह प्रमाणित किया कि शिक्षण पर पुरस्कार का प्रत्यक्ष तथा दंड का अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ता है। इन्होंने पुरस्कार के

Scanned with CamScanner

S-I
CORE-I

दो रूप - भौतिक तथा मौखिक बताया। इसी प्रकार दंड के भी दो रूप मौखिक तथा शारीरिक दंड को स्पष्ट किया। इन्होंने अपने प्रयोगात्मक अध्ययन के आधार पर बताया कि बच्चों के शिक्षण के मौखिक पुरस्कार की अपेक्षा भौतिक पुरस्कार तथा मौखिक दंड की अपेक्षा शारीरिक दंड काफी प्रभावकारी होता है। इसी तरह व्यस्कों के लिए भौतिक की अपेक्षा मौखिक पुरस्कार तथा भौमि शारीरिक की अपेक्षा मौखिक दंड काफी प्रभावकारी होता है। क्योंकि इन दोनों के कारण ही प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समस्या समाधान की कुशलता बढ़ जाती है।

Hurlock 1925 ने मानव शिक्षण पर प्रशंसा एवं निंदा (Praise and reproof) के प्रभाव को देखने के लिए समान बच्चों (Matched children) के चार समूहों - प्रशंसित समूह, निन्दित समूह, उपेक्षित समूह तथा नियंत्रित समूह पर अध्ययन किया। इन सभी समूहों को एक अंकगणितीय अंकगणितीय समस्या का समाधान करने दिया गया तो परिणाम में देखा गया कि नियंत्रित समूह समूह की अपेक्षा उपेक्षित समूह में उपेक्षित समूह की अपेक्षा निन्दित समूह में तथा निन्दित समूह की अपेक्षा प्रशंसित समूह में कार्य कुशलता अधिक पायी गयी इस अध्ययन के आलोक में Hurlock ने निष्कर्ष निकाला निकाला कि प्रेरक प्रोत्साहन के कारण कार्य की कुशलता बढ़ती है। यानि पुरस्कार दंड की अपेक्षा अधिक कारगर है।

Meek 1925 ने भी Kindergarten children किंडरगार्टन बालकों पर प्रयोग कर प्रमाणित किया कि सीखने की क्रिया पर सफलता का सहायक प्रभाव तथा असफलता का अवरोधक प्रभाव पड़ता है। Beatrice Lantz 1945 (बीएट्राइस लैंट्ज) ने भी बच्चों पर प्रयोग

S - I

CORE - I

कर प्रमाणित किया कि सफलता से जहां शिक्षण की कुशलता बढ़ जाती है वहीं असफलता शिक्षण कुशलता को बाधित कर देता है क्योंकि सफलता से सीखने की क्रिया प्रबलित होती है साथ ही और भी निर्मुक्त होती है जिससे सीखने के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति बन जाती है जबकि दूसरी तरफ बार-2 की असफलता से कुण्ठा उत्पन्न होती है। और व्यक्ति हतोत्साहित हो जाता है जिससे सीखने की रुचि न सिर्फ घटती है वरन व्यक्ति शिक्षण के प्रति उदासीन भी हो जाता है। फलतः प्रतिकूल मनोवृत्ति विकसित हो जाती है। Lewin 1941 ने भी सफलता तथा असफलता के महत्व को मानव शिक्षण में स्वीकार करते हुए बताया कि सफलता तथा असफलता का गहरा संबंध आकांक्षा स्तर से है।

मानव शिक्षण पर बाह्य तथा आंतरिक पुरस्कार का भी प्रभाव पड़ता है। लेकिन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि बाह्य की अपेक्षा आंतरिक पुरस्कार काफी महत्वपूर्ण होता है यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु या उत्तेजना को प्राप्त करने के उद्देश्य से कोई क्रिया करता है तो यह बाह्य पुरस्कार कहलाता है। जैसे - जब कोई बालक अपने अभिभावक से पैसा या प्रशंसा पाने के लिए अपना पाठ याद करता है तो यहां पैसा या प्रशंसा बाह्य पुरस्कार है लेकिन जब कोई व्यक्ति अपनी किसी क्रिया को अपनी रुची या आत्म संतुष्टि हेतु करता है तो यही आंतरिक पुरस्कार है।

शिक्षण में प्रेरणा के रूप में बाह्य पुरस्कार आंतरिक पुरस्कार की तुलना में कम प्रभावी होता है। क्योंकि बाह्य पुरस्कार से कभी-2 हानी होती है। तथा शिक्षण प्रयास में गिरावट आ जाती है। यहां पुरस्कार कभी-2 घूसखोरी का भी रूप धारण कर लेता है। सधारणतया देखा जाता है कि जब पुरस्कार के रूप में प्रयोज्य को कुछ मिलता रहता है तभी तक वह किसी क्रिया को जारी रखता है तथा पुरस्कार बंद होने पर सीखी गयी क्रिया विलोपित हो जाती है। De charms 1968 (डे-चार्मस) के

Scanned with CamScanner

S-I

CORE-I

अध्ययन से अपर्युक्त मतों की पुष्टि होती है। Deci 1968 (डेसी) 1971 ने कालेज छात्रों पर अध्ययन कर स्पष्ट किया कि बाह्य पुरस्कार की तुलना में आंतरिक पुरस्कार की स्थिति में छात्रों का शिक्षण बेहतर हो गया।

Thorndike 1932 ने शिक्षण के परिणाम के ज्ञान (Knowledge of Result) को देखने के लिए समान बालकों के दो समूह पर अध्ययन किया- एक समूह को प्रयोगात्मक तथा दूसरे को नियंत्रित समूह कहा गया दोनों समूहों के बालकों की आंखों पर पट्टी बांध कर 3 इंच लम्बी लकीर खींचने का ~~निर्देश~~ निर्देश दिया गया। प्रयोगात्मक समूह के बालकों को प्रत्येक प्रयास के बाद परिणाम का ज्ञान (KR) दिया गया जबकि नियंत्रित समूह को कोई (KR) नहीं दिया गया तो देखा गया कि प्रयोगात्मक समूह के बच्चों ने नियंत्रित समूह के बच्चों की अपेक्षा समस्या समाधान जल्द किया। Blum and Naylor 1984 ने ~~Thorndike~~ Thorndike के अध्ययन से सहमत होते हुए बताया कि Knowledge of Result, feed back (परिणाम का ज्ञान पुनर्निवेश) का काम करता है जिससे निष्पादन ~~में~~ बेहतर हो जाता है।

ANIMAL LEARNING पशु शिक्षण -

मनोवैज्ञानिकों ने पशुशिक्षण में मूलतः जैविक प्रेरकों जैसे - भूख, प्यास, सेक्स नींद आदि के प्रभाव को महत्वपूर्ण माना क्योंकि ऐसे ही अभिप्रेरकों के कारण पशु किसी अनुक्रिया को सीखते है। सीखने के क्षेत्र में किये गए अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है कि जब पशु में तीव्र प्रेरक होते है तो वह किसी अनुक्रिया को जल्द सीख लेता है। यहां कुछ ऐसे ही अध्ययनों के आलोक में

S-I

CORE-I

शिक्षण में प्रेरणा के महत्व को स्पष्ट करने की चेष्टा की जा रही है।

Parlov ने ~~coditioning~~ classical conditioning के आलोक में शिक्षण में प्रेरणा के महत्व को स्पष्ट किया इन्होंने क्लासिक प्रतिवर्त से संबंधित एक प्रयोग किया तथा पाया कि प्रबलन के कारण अस्वाभाविक उत्तेजना तथा स्वाभाविक अनुक्रिया के बीच संबंध स्थापित हो गया।

इसी तरह एक प्रारंभिक अध्ययन Thorndike ने भी किया इन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि जब बिल्ली और चूहे भूख से प्रेरित थे तो वे अपनी समस्या का समाधान करना सीख लिये लेकिन जब उन्हें किसी प्रेरक से ~~उत्तेजित~~ प्रेरित नहीं किया गया तो वे अपनी समस्या के प्रति सक्रिय भी नहीं थे तभी तो इन्होंने कहा कि शिक्षण के लिए प्रेरणा आवश्यक है।

Skinner 1938 ने भी चूहे तथा कबूतर पर अध्ययन कर बताया कि operant conditioning के लिए प्रेरणा तथा प्रबलन अनिवार्य है। Skinner ने यह भी बताया कि पशु शिक्षण पर सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रबलनों का प्रभाव पड़ता है इन्होंने प्रमाणित किया कि सकारात्मक प्रबलन के कारण प्राणी सही अनुक्रिया को सीखता है तथा नकारात्मक प्रबलन से गलत अनुक्रिया से दूर भागता है। अतः सकारात्मक प्रबलन प्रत्यक्ष रूप से तथा नकारात्मक प्रबलन अप्रत्यक्ष रूप से प्राणी शिक्षण को प्रभावित करता है।

पशुओं पर विभेद शिक्षण के आधार पर किये गए अध्ययनों से भी प्रेरणा का महत्व स्पष्ट होता है। ऐसे शिक्षण में प्राणी किसी एक ही उत्तेजना के प्रति अनुक्रिया करना सीखता है। दूसरे उत्तेजनाओं के प्रति नहीं। Hanson 1959 (हैनसन) ने अपने अध्ययन में पाया कि हरा पीला प्रकाश होने पर कबूतर को प्रबलन दिया जाता था तथा दूसरा प्रकाश (काला) के संकेत से प्रकाशित होने पर उसे प्रबलन नहीं दिया जाता था तो देखा गया कि कबूतर ने हरा पीला प्रकाश होने पर

S - I

CORE - I

सुनने का व्यवहार सीखा तथा लाल के जलने पर नहीं सीखा।

Tolman 1930 ने शिक्षण के लिए नहीं वरन निष्पादन के लिए प्रेरणा को महत्वपूर्ण माना क्योंकि इन्होंने शिक्षण तथा निष्पादन में अंतर माना तथा अपने पक्ष में अप्रकट शिक्षण का उल्लेख किया और बताया कि अप्रकट शिक्षण उसे कहते हैं जिसकी अभिव्यक्ति सीखते समय व्यवहार द्वारा नहीं की जा सकती। लेकिन जब व्यवहार द्वारा इसकी अभिव्यक्ति होने लगती है तो यही निष्पादन है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सभी प्रायः सभी मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षण में प्रेरणा के महत्व को स्वीकार किया तथा उपर्युक्त अध्ययनों के आलोक में कहा जा सकता है कि प्रेरणा शिक्षण का एक आवश्यक कारक है तभी तो Melton ने भी कहा कि Motivation is an essential condition of learning." यानि प्रेरणा सीखने की एक आवश्यक शर्त है।

इसी तरह शिक्षण में प्रेरणा के महत्व को स्पष्ट करते हुए Anderson (एण्डरसन) ने बताया कि - Learning will proceed best, if motivated." यानि शिक्षण की सर्वोत्तम प्रगति तभी होगी जबकि व्यक्ति उत्प्रेरित हो।